

विचार बिन्दु

आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती। –महात्मा गाँधी

राजस्थान में डिजिटल शिक्षा भविष्य की राह दिखाएगी

राजस्थान में डिजिटल शिक्षा अब किसी दूर की कल्पना का विषय नहीं रह गई है। विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाओं, डिजिटल बोर्ड, आईसीटी प्रयोगशालाओं, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई-सामग्री और शाला दर्पण जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार हो रहा है। फिर भी प्रदेश में डिजिटल शिक्षा की स्थिति को केवल उपकरणों की संख्या से नहीं, बल्कि इंटरनेट की उपलब्धता, शिक्षकों की दक्षता, विद्यार्थियों की पहुँच, सामग्री की गुणवत्ता और उसके वास्तविक उपयोग के आधार पर समझना होगा। राजस्थान ने डिजिटल शिक्षा की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन ठाम्नीग, दूरस्थ और आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों में डिजिटल असमानता अभी भी बड़ी चुनौती बनी हुई है। राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश के सबसे बड़े राज्यों में है। यहाँ मरुस्थलीय क्षेत्र, पहाड़ी अंचल, आदिवासी बहुल जिले, सीमावर्ती गाँव और दूर-दराज की ढाणियाँ हैं। इन क्षेत्रों में विद्यालयों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाना हमेशा कठिन रहा है। ऐसे में डिजिटल शिक्षा शिक्षा-व्यवस्था को अधिक व्यापक, लचीला और संसाधन-संपन्न बनाने का माध्यम बन सकती है। यदि किसी दूरस्थ विद्यालय में विषय-विशेषज्ञ शिक्षक उपलब्ध नहीं है, तो डिजिटल सामग्री, वीडियो पाठ, वचुअल कक्षा और ऑनलाइन प्रशिक्षण उस कमी को कुछ हद तक पूरा कर सकते हैं। इसी संभावना को ध्यान में रखते हुए राजस्थान में डिजिटल शिक्षा का आधारभूत ढाँचा लगातार विकसित किया जा रहा है।

राजस्थान में शाला दर्पण डिजिटल शिक्षा और विद्यालयी प्रशासन का एक महत्वपूर्ण मंच बन चुका है। इसके माध्यम से विद्यालयों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, उपस्थिति, परीक्षा परिणाम और अन्य शैक्षिक गतिविधियों से संबंधित सूचनाओं का संकलन और निगरानी की जाती है। शाला दर्पण ने विद्यालयी प्रशासन में पारदर्शिता और त्वरित सूचना-प्रवाह को बढ़ावा दिया है। पहले जिन सूचनाओं के लिए विद्यालय, ब्लॉक और जिला स्तर पर कागजी प्रक्रिया और लंबा समय लगता था, वे अब डिजिटल माध्यम से उपलब्ध हो सकती हैं। शिक्षक, अधिकारी और अभिभावक विद्यालय से जुड़ी अनेक जानकारीयें ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। डिजिटल मंचों का लाभ केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं है। दीक्षा पोर्टल के माध्यम से शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम आधारित ई-सामग्री, वीडियो, अभ्यास सामग्री और प्रशिक्षण मॉड्यूल उपलब्ध कराए जा रहे हैं। राजस्थान में शिक्षकों को शाला दर्पण के माध्यम से दीक्षा पोर्टल पर प्रवेश की सुविधा भी दी गई है। इससे शिक्षक अपने विषय और कक्षा के अनुरूप डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण को ऑनलाइन माध्यम से उपलब्ध कराने से प्रशिक्षण की पहुँच बढ़ी है और समय तथा संसाधनों की बचत हुई है।

कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का महत्व अचानक बढ़ गया था। विद्यालय बंद होने के कारण ऑनलाइन कक्षाएँ, दूरदर्शन, रेडियो, मोबाइल फोन और व्हाट्सऐप समूहों के माध्यम से विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री पहुँचाने का प्रयास किया गया। उस समय यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल शिक्षा केवल सुविधा नहीं, बल्कि संकट के समय शिक्षा को निरंतरता बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण साधन भी है। साथ ही यह भी सामने आया कि सभी विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन, इंटरनेट और शांत अध्ययन वातावरण उपलब्ध नहीं है। अनेक ग्रामीण परिवारों में एक ही मोबाइल फोन था, जिसे परिवार के कई सदस्य उपयोग करते थे। कई विद्यार्थियों को नेटवर्क की समस्या, डेटा खर्च और बिजली की अनियमितता का सामना करना पड़ा।

राजस्थान में शिक्षकों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है। अनेक शिक्षक पारंपरिक पद्धतियों में दक्ष हैं, लेकिन डिजिटल पाठ तैयार करने, ऑनलाइन मूल्यांकन करने, शैक्षिक एप्लिकेशन का उपयोग करने और विद्यार्थियों की डिजिटल प्रगति का विश्लेषण करने के लिए उन्हें निरंतर प्रशिक्षण चाहिए। प्रशिक्षण केवल एक बार आयोजित होने वाला कार्यक्रम नहीं होना चाहिए। शिक्षकों को नियमित रूप से अभ्यास, सहयोग और तकनीकी सहायता मिलनी चाहिए। प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर डिजिटल संसाधन केंद्र और तकनीकी सहायता दल स्थापित किए जा सकते हैं, जो विद्यालयों को तत्काल सहायता प्रदान करें।

डिजिटल शिक्षा का एक बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी अपनी गति के अनुसार सीख सकते हैं। जो विद्यार्थी किसी विषय को जल्दी समझ लेते हैं, वे उन्नत सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं। जिन विद्यार्थियों को कठिनाई होती है, वे वीडियो पाठ और अभ्यास सामग्री को दोबारा देख सकते हैं। दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित या अन्य विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए ऑडियो, बड़े अक्षरों वाली सामग्री, संकेत भाषा और उपशीर्षक जैसी सुविधाएँ उपयोगी हो सकती हैं। इस दिशा में डिजिटल सामग्री को समावेशी, सरल और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की जरूरत है।

राजस्थान में भाषा का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण और छोटे शहरों के बहुत से विद्यार्थी हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। अनेक विद्यार्थी स्थानीय बोलियों और भाषायी परिवेश से आते हैं। यदि डिजिटल सामग्री केवल कठिन हिंदी या अंग्रेजी में होगी, तो विद्यार्थी उससे पूरी तरह लाभांन्वित नहीं हो पाएंगे। राजस्थानी की विभिन्न बोलियों, सरल हिंदी और स्थानीय उदाहरणों का उपयोग डिजिटल सामग्री को अधिक प्रभावी बना सकता है। गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को स्थानीय जीवन, कृषि, जल-संरक्षण, पशुपालन, मरुस्थलीय परिसिंथियों और राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत से जोड़कर पढ़ाया जाए, तो सीखने की प्रक्रिया अधिक अर्थपूर्ण बन सकती है।

डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में निजी विद्यालयों और सरकारी विद्यालयों के बीच अंतर भी दिखाई देता है। निजी विद्यालयों में कई बार बेहतर इंटरनेट, अधिक उपकरण और तकनीकी सहायता उपलब्ध होती है, जबकि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता असमान है। यह अंतर केवल विद्यालयों के बीच नहीं, बल्कि एक ही जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच भी देखा जा सकता है। डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य सभी समल होना, जब सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री, उपकरण और इंटरनेट की समान सुविधा मिले। अन्यथा तकनीक शैक्षिक असमानता कम करने के बजाय उसे और बढ़ा सकती है।

राजस्थान के लिए डिजिटल शिक्षा एक अवसर भी है और जिम्मेदारी भी। अवसर इसलिए कि तकनीक के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण सामग्री पहुँचाई जा सकती है, शिक्षकों को बेहतर संसाधन मिल सकते हैं और विद्यार्थियों में नई दक्षताएँ विकसित की जा सकती हैं। जिम्मेदारी इसलिए कि डिजिटल शिक्षा के नाम पर किसी विद्यार्थी को पीछे न छूटने दिया जाए।

डिजिटल शिक्षा के विस्तार के साथ साइबर सुरक्षा और डिजिटल अनुशासन का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। विद्यार्थियों को इंटरनेट का सुरक्षित उपयोग, निजी जानकारी की सुरक्षा, मजबूत पासवर्ड, फर्जी संदेशों की पहचान और साइबर अपराधों से बचाव की जानकारी दी जानी चाहिए। शिक्षकों और अभिभावकों को भी यह समझना होगा कि डिजिटल उपकरण केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं। बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर निगरानी रखें। इससे समय विव्श्रसन, संवाद और मार्गदर्शन का संतुलन आवश्यक है। विद्यालयों में डिजिटल नागरिकता और साइबर सुरक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

डिजिटल शिक्षा में स्त्रीों टाइन का संतुलन भी जरूरी है। लंबे समय तक मोबाइल या स्त्रीोन के सामने रहने से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, एकता और सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए डिजिटल शिक्षा को पुस्तक-पठन, लेखन, खेल, कला, प्रयोग, संवाद और प्रत्यक्ष अनुभूवों का विकल्प नहीं बनाया जाना चाहिए। एक प्रभावी कक्षा सह होगी, जिसमें शिक्षक कभी वीडियो का उपयोग करें, कभी प्रयोग करवाएं, कभी समूह चर्चा कराएं और कभी विद्यार्थियों को पुस्तकालय या खुले वातावरण में सीखने का अवसर दें। शिक्षा का उद्देश्य केवल डिजिटल दक्षता नहीं, बल्कि ज्ञाप्रसा, संवेदना, विवेक और सृजनशीलता का विकास है।

अभिभावकों की भूमिका भी निर्णायक है। ग्रामीण और निम्न आय वर्ग के अनेक अभिभावक डिजिटल उपकरणों का उपयोग पूरी तरह नहीं जानते। विद्यालयों को अभिभावकों के लिए छोटे-छोटे डिजिटल जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। उन्हें बताया जाना चाहिए कि विद्यार्थी ऑनलाइन जानें कैसे जुड़ें, अध्ययन सामग्री कैसे प्राप्त करें और बच्चे की प्रगति को कैसे समझें। यदि घर और विद्यालय के बीच डिजिटल संवाद मजबूत होगा, तो विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया अधिक निरंतर और प्रभावी बनेगी।

राजस्थान में डिजिटल शिक्षा का अगला चरण केवल स्मार्ट कक्षाओं को संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं होना चाहिए। अब ध्यान सीखने के परिणामों पर केंद्रित होना चाहिए। प्रत्येक डिजिटल पहल के बाद यह मूल्यांकन आवश्यक है कि विद्यार्थियों की समझ, उपस्थिति, पठन क्षमता, गणितीय दक्षता और समस्या-समाधान क्षमता में किताना सुधार हुआ। डिजिटल मंचों से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग केवल रिपोर्ट तैयार करने के लिए नहीं, बल्कि कमजोर विद्यार्थियों की पहचान और उनके लिए विशेष सहायता देने के लिए किया जाना चाहिए।

इसके लिए विद्यालय स्तर पर डिजिटल शिक्षा की स्पष्ट कार्ययोजना बननी चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में यह तय किया जा सकता है कि कौन-सी कक्षा में किस विषय के लिए डिजिटल सामग्री का उपयोग होगा, उपकरणों का रखरखाव कौन करेगा, इंटरनेट की समस्या होने पर वैकल्पिक व्यवस्था क्या होगी और शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता कहीं है। जिला स्तर पर डिजिटल संसाधनों का साझा पंंडार बनाया जा सकता है। उकृष्ट शिक्षकों द्वारा तैयार स्थानीय सामग्री को अन्य विद्यालयों तक पहुँचाया जाना चाहिए। इससे डिजिटल शिक्षा केवल ऊपर से भेजी गई सामग्री पर निर्भर नहीं रहेगी, बल्कि स्थानीय शिक्षकों की रचनात्मकता भी सामने आएगी।

सरकार, विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समाज इन सभी की साझी भूमिका से ही डिजिटल शिक्षा प्रभावी हो सकती है। कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत कंपनियाँ विद्यालयों में उपकरण देने के साथ-साथ उनके रखरखाव, इंटरनेट, शिक्षक प्रशिक्षण और स्थानीय डिजिटल सामग्री के निर्माण में भी सहयोग कर सकती हैं। केवल उद्योगोतन समागोह में उपकरण वितरित कर देना पर्याप्त नहीं है। उपकरणों का उपयोग, उनकी कार्यशीलता और विद्यार्थियों के सीखने पर उनका प्रभाव नियमित रूप से जाँचा जाना चाहिए।

राजस्थान के लिए डिजिटल शिक्षा एक अवसर भी है और जिम्मेदारी भी। अवसर इसलिए कि तकनीक के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण सामग्री पहुँचाई जा सकती है, शिक्षकों को बेहतर संसाधन मिल सकते हैं और विद्यार्थियों में नई दक्षताएँ विकसित की जा सकती हैं। जिम्मेदारी इसलिए कि डिजिटल विकास के नाम पर किसी विद्यार्थी को पीछे न छूटने दिया जाए। जिन बच्चों के पास व्यक्तिगत उपकरण नहीं हैं, उनके लिए विद्यालय आधारित डिजिटल केंद्र, सामुदायिक अध्ययन केंद्र और साझा उपकरणों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

राजस्थान के क्षेत्र में आधारभूत विस्तार की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। स्मार्ट कक्षाएँ, आईसीटी प्रयोगशालाएँ, शाला दर्पण, दीक्षा, ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल सामग्री राज्य की शिक्षा-व्यवस्था को नई दिशा दे रहे हैं। फिर भी वास्तविक सफलता तब मानी जाएगी, जब जैसेलमेर की ढाणों, बांसवाडा का आदिवासी गाँव, धौलपुर का ग्रामीण विद्यालय और जयपुर का शहरी विद्यालय सभी के विद्यार्थियों को सीखने के समान अवसर मिलें। डिजिटल शिक्षा का लक्ष्य उपकरणों से भरे विद्यालय नहीं, बल्कि ज्ञाप्रसा, सक्षम, सुरक्षित और सृजनशील विद्यार्थी होने चाहिए।

राजस्थान को अब डिजिटल शिक्षा की मात्रा से आगे बढ़कर उसकी गुणवत्ता, समानता और निरंतरता पर ध्यान देना होगा। तकनीक तभी साक्षर है, जब वह शिक्षक को सशक्त बनाए, विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाए और समाज में ज्ञान की पहुँच को व्यापक करे। यदि डिजिटल शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं, मानवीय संवेदना और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण से जोड़ा गया, तो यह राजस्थान के शैक्षिक भविष्य को नई ऊँचाई दे सकती है। अन्यथा स्मार्ट उपकरणों और चमकदार कक्षाओं के बावजूद शिक्षा की मूल चुनौतियाँ बनी रहेंगी। इसलिए समय की मौँग है कि डिजिटल शिक्षा को योजना नहीं, शिक्षा के वास्तविक सुधार का जीवन और समावेशी माध्यम बनाया जाए।

—अतिथि संपादक,

अनिवार ज्योशी,

वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

संपादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस : वैश्विक अशांति के दौर में बापू के विचारों की स्वीकार्यता



प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंटालिया

“अहिंसा परमोधर्मः”—यह शाश्वत वाक्य सदियों से भारतीय संस्कृति, चिंतन और जीवन दर्शन का मूल आधार रहा है। आधुनिक युग में इस मानवीय मूल्य को वैश्विक आंदोलन का रूप देने का श्रेय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को जाता है। यही कारण है कि बापू के जन्मदिन, 2 अक्टूबर को संपूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्तमान समय में, जब वैश्विक परिदृश्य युद्ध, वैचारिक कट्टरता और आपसी अविश्वास की आग में झुलस रहा है, तब अहिंसा का यह संदेश केवल एक नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि मानवता के

सह-अस्तित्व को बचाने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग बनकर उभरता है।

इस दिवस को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर मान्यता मिलने का सफर बेहद दिलचस्प और प्रेरणादायी है। 30 जनवरी 2004 को मुंबई में सहयोग संस्था द्वारा आयोजित एक वैचारिक कार्यक्रम में ईरानी मूल की नोबेल पुरस्कार विजेता शिरिन ईबादी उपस्थित थीं। उसी मंच पर पेरिस में कार्यरत हिंदी शिक्षक अक्षय बकाया ने यह ऐतिहासिक सुझाव रखा कि महात्मा गांधी के अद्वितीय योगदान को अधुण्ण रखने के लिए उनके जन्मदिन को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया जाना चाहिए। यह विचार ईबादी को बेहद पसंद आया और उन्होंने इसके लिए प्रयास शुरू किए।

कालांतर में भारत सरकार ने वर्ष 2007 में इस संबंध में एक आधिकारिक प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा को भेजा। इस प्रस्ताव को वैश्विक समुदाय का अभूतपूर्व समर्थन मिला। महासभा के 191 सदस्य देशों में से 140 से अधिक देशों ने इस प्रस्ताव को सह-प्रायोजित किया, जिसमें भारत के पड़ोसी देशों के साथ-साथ अफ्रीका और अमरीका महाद्वीप के कई देश

जय जवान–जय किसान के उद्घोषक और सादगी की प्रतिमूर्ति शास्त्रीजी के मर्मस्पर्शी प्रेरणादायक संस्मरण



डॉ. जे.के. गर्ग

नाते कद और हमेशा मुस्कताता हुआ चेहरा रखने वाले शास्त्रीजी जवाहरलाल के उत्तराधिकारी बन कर देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। वास्तव में शास्त्रीजी जहाँ एक तरफ आजादी के लिये अपना सर्वस्व कुर्बान करने का संकल्प रखते थे वहीं दूसरी तरफ वो मितभाषी और आत्मसम्मान के धनी थे। मात्र 17 साल की उम्र में वे जेल गये थे। उन्होंने नो साल जेल के अंदर बिताये। वर्तमान समय के राज नेता तो अपनी आत्म वंचना सेल्फ प्रेज ईंगो और सच्चे छूटे बडबोलेपन एवं सेल्फ मार्केटिंग से जजसाधणा नागरिकों को बहलाने फुसलाने और उनका नाम अखबारों में छपे और टेलीवीजन पर लोग उनको तारीफ के गीत गायें तथा उनके कामों की प्रशंसा करें ऐसा काम करके शान चला रहें हैं। इन सब के विपरीत शास्त्रीजी तो कभी भी नहीं चाहते थे कि उनका नाम अखबारों में छपे।

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी कायदे कानून की अवहेलना नहीं होने की थी, वो तो सही मायने के अंदर बापू जी के आदर्शों को मानने वाले उनके सच्चे अनुयायी थे। उनमें न किसी भी पद और सम्मान का लालच था और ना ही पद का अभिमान था। 1965 की भारत पाकिस्तान की लड़ाई के समय पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को पार करके पाकिस्तान की भरती में घुस कर आक्रमण कर लाहौर के नजदीक पहुँच जाने का साहसिक फैसला लेने वाले शास्त्रीजी ही थे। उनके इस निर्णय की प्रसंसा तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी और वायुसेना के मुखिया एयर मार्शल अर्जुन ने भी की थी।

पिछले 50 वर्षों में जन्म लेने वाले हिन्दुस्थानियों को तो इस बात में विश्वास ही नहीं होगा कि आज का कोई मंत्री नैतिकता और अपनी आत्मा की आवाज

पर उसके विभाग में घंटित दुर्घटना पर मन्त्री पद से त्याग पत्र देने की हिमत करने वाले शास्त्रीजी ही थे। जननायक शास्त्रीजी की एक आवाज पर लाखों नर–नारियों ने सप्ताह के एक दिन सोमवार को अन्न नहीं खाने का व्रत ले लिया था और उसका पालन भी किया।

जय जवान जय किसान के नारे का उद्घोष करने वाले नाटे कद के हमारे शास्त्रीजी ही थे। शास्त्रीजी सहशरीलता में उनकी महानता में भी परिलक्षित होती थी। लाल बहादुर ने ना कभी क्रोध किया और ना ही कभी कोई शिकायत की थी। उनका मानना था कि अगर हम भष्टाचार को गम्भीरता से लें तो हम जरूर अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकेंगे। शास्त्रीजी का मानना था कि सच्चे लोकतंत्र में कभी भी हिंसा हो कोई विवाद सुलझाया नहीं सकता है, परस्पर संवाद वार्तालाप से ही समस्याओं को दूर किया जा सकता है।2 अक्टूबर 2026 को जननायक शास्त्रीजी के 122वें जन्म दिन पर 142 करोड़ भारतीयों का उनके श्री चरणों में कोटि कोटि नमन और श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

लाल बहादुर शास्त्री के विस्मयकारी प्रेरणा दायक संस्मरण बचपन में ही नन्हें लाल बहादुर ने तय कर लिये थे। उन्होंने नो साल जेल के अंदर गीत गायें तथा उनके कामों की प्रशंसा करें ऐसा काम करके शान चला रहें हैं। इन सब के विपरीत शास्त्रीजी तो कभी भी नहीं चाहते थे कि उनका नाम अखबारों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा करें। लाला लाजपत राय से लोक सेवामंडल के सदस्य की दीक्षा लेने के बाद लाला लाजपत राय ने उनसे कहा लाजपत बहादुर तामसहल में दो तरह के पत्थर लगे हैं यथा सफेद संगमरमर और नीव में लगाये गये साधारण पत्थर, संगमरमर के पत्थरों को दुनिया देखती है और उनको प्रसंसा भी करती है, वहीं दूसरे तरह के पत्थर नीव में लगे जिनके जीवन में सिर्फ अंधेरा अँधेरा ही है लेकिन तामसहल को उन्होंने खड़ा रक्खा हुआ है, इसलिए तुम नीव के पत्थर बनने की कोशिश करना।

शास्त्रीजी ने कहा मुझे लालाजी के वो शब्द आज भी याद है इसीलिए मैं नीव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ। इसीलिए शास्त्रीजी जीवन पर्यन्त नीव के मजबूत पत्थर काम करते रहे और कभी भी नहीं चाह कि उनका नाम अखबारों की सुर्खियाँ बने और लोग

गांधी जी की सत्य और अहिंसा की विचारधारा हिंदू और जैन दर्शन के साथ–साथ शांतिवादी ईसाई शिक्षाओं से भी अनुप्राणित थी। वे आध्यात्मिक और व्यावहारिक शुद्धता के आग्रही थे। वाणी पर नियंत्रण और आंतरिक शांति के लिए वे सप्ताह में एक दिन मौन रखते थे। उन्होंने अपने पत्र यंग इंडिया में स्पष्ट लिखा था कि अहिंसा भीरु और कायर लोगों का तरीका नहीं है, बल्कि यह तो उन वीरों का गुण है जो बिना डरे मृत्यु का सामना करने का साहस रखते हैं। तलवार लेकर लड़ने वाले से कहीं अधिक वीर वह है, जो बिना प्रतिशोध की भावना के अन्याय के खिलाफ अडिग रहता है।

सत्याग्रह एक महान व्यावहारिक अस्त्रः गांधी जी ने अहिंसा को केवल व्यक्तिगत आचरण या पारलौकिक शक्ति का साधन नहीं माना, बल्कि इसे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान का एक सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने सत्याग्रह नामक जिस राजनीतिक सक्रियता की विधि को विकसित किया, उसका पहला व्यावहारिक प्रयोग गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों के हक के लिए किया गया। फसल खराब होने के बावजूद

ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए दमनकारी टैक्स के विरोध में किसानों ने बिना किसी दंगे या हिंसा के शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। अंततः सच्चाई और अहिंसा के इस अनूठे हथियार के सामने औपनिवेशिक सत्ता को झुकना पड़ा और टैक्स माफ कर दिए गए।

गौरवान्वित होता भारतःहम मानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने बापू के सिद्धांतों को अंगीकार कर भारत के कद को विश्वपटल पर और ऊँचा किया है। आज के परमाणु युग में, जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ, द्वेष या क्रोध के कारण मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, वहाँ गांधी जी के विचार और अधिक प्रसंगिक हो जाते हैं। हिंसा कभी भी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकती, वह केवल नए प्रतिशोध को जन्म देती है। यदि हम एक सुरक्षित, प्रगतिशील और शांत समाज का निर्माण करना है, तो हमें अपने दैनिक जीवन और नीतियों में अहिंसा, सहिष्णुता तथा करुणा को स्थान देना होगा। यही इस दिवस का वास्तविक संदेश है।

—प्रो. (डॉ.) पी. सी. कंटालिया, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि., उदयपुर

यह बात उसके दिल में घर कर गई और उसने इसे जीवन भर नहीं भुलाया।

उसी दिन से बच्चे ने अपने हृदय में यह निश्चय कर लिया कि वह कभी भी ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे किसी का कोई नुकसान हो।

बड़ा होने पर वही बालक भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के आन्दोलन में कूद पड़ा। एक दिन इसी मासूम बालक ने लालबहादुर शास्त्री के नाम से देश के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया। स्वाभिमान आत्मसम्मान के धनी आजादी के दिवाने शास्त्रीजी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जेल में थे तब घर पर उनकी पुत्री गम्भीर रूप बीमार थी, उनके साथियों ने उन्हें जेल से बाहर आकर पुत्री को देखने और उसकी देखभाल करने लिये आग्रह किया, शास्त्री की पैराल भी स्वीकृत हो गई, परन्तु शास्त्रीजी ने पैराल पर छूटकर जेल से बाहर आना अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा। क्योंकि वे यह लिखकर देते की तैयार न थे कि बाहर निकलकर वे स्वतन्त्रता आन्दोलन में कोई काम नहीं करेंगे। अंत में मजिस्ट्रेट को शास्त्रीजी को पन्द्रह दिनों के लिए बिना शर्त छोड़ना पड़ा। वे घर पहुँचे, लेकिन उसी दिन बालिका के प्राण–पखेरू उड़ गए। शास्त्रीजी ने कहा, जिस काम के लिए मैं आया था, वह पूरा हो गया है। अब मुझे जेल से बाहर जाना चाहिये। और उसी दिन वो जेल वापस चले गये। शास्त्रीजी नहीं चाहते थे कि उनका नाम अखबारों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा करें। लाला लाजपत राय से लोक सेवामंडल के सदस्य की दीक्षा लेने के बाद लाला लाजपत राय ने उनसे कहा लाजपत बहादुर तामसहल में दो तरह के पत्थर लगे हैं यथा सफेद संगमरमर और नीव में लगाये गये साधारण पत्थर, संगमरमर के पत्थरों को दुनिया देखती है और उनको प्रसंसा भी करती है, वहीं दूसरे तरह के पत्थर नीव में लगे जिनके जीवन में सिर्फ अंधेरा अँधेरा ही है लेकिन तामसहल को उन्होंने खड़ा रक्खा हुआ है, इसलिए तुम नीव के पत्थर बनने की कोशिश करना।

शास्त्रीजी ने कहा मुझे लालाजी के वो शब्द आज भी याद है इसीलिए मैं नीव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ। इसीलिए शास्त्रीजी जीवन पर्यन्त नीव के मजबूत पत्थर काम करते रहे और कभी भी नहीं चाह कि उनका नाम अखबारों की सुर्खियाँ बने और लोग

उनकी प्रशंसा करें। कभी भी कायदे कानून की अवहेलना नहीं होने दी।

1956 में तमिलनाडू के अरियालपुर में हुई रैल टुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए शास्त्रीजी ने रेलवे मंत्री का पद छोड़ दिया था। क्या हम वर्तमान मंत्रियों से ऐसे आचरण की अपेक्षा रख सकते हैं? कदापि नहीं । सहनशीलता में भी उनकी महानता परिलक्षित होती थी। 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के समय सुरक्षा कारणों से हवाई हमले की घंटी बज सकती थी। उन दिनों सुरक्षा के लिये प्रधान मंत्री भवन में भी खाई बनाई गई थी। सुरक्षा कर्मियों ने प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री से अनुरोध किया आज हमारे कर्मियों की आशंका अधिक है। आप घंटी बजते ही तुरंत खाई में चले जायें। किंतु दैवयोग से हमला नहीं हुआ। अगले दिन सुबह देखा गया कि बिना बमबारी के खाई गिरकर पट गई है। खाई बनाने वालों तथा उसे पास करने वालों की यह अक्षम्य लापरवाही आज भी हमारे सामने है, किन्तु शास्त्रीजी ने संबंधित व्यक्तियों के प्रति कोई कठोरता नहीं बरती अपितु बालकों की भाँति क्षमा कर दिया। ना क्रोध और ना शिक्षायता।

स्वभाव से ही उदार तथा सहिष्णु इन्सान ताशकंद जाने के एक दिन पूर्व वे भोजन कर रहे थे। ललितता ने उसदिन उनकी पसंद का खिचड़ी तथा आलू का भरता बनाया था। ये दोनों वस्तुएँ उन्हें सर्वाधिक प्रिय थीं। बड़े प्रेम से खाते रहे। जब खा चुके उसके थोड़ी देर बाद उन्होंने वह प्रसंग आगे पढ़े कि इसज भाव से श्रीमती ललितता जी से पूछा– क्या आज आपने खिचड़ी में नमक डाला था? ललितता जी को अपनी गलती पर बड़ा दुःख हुआ किन्तु शास्त्रीजी ने न कोई शिकायत की और ना ही गुस्सा, वे तो फीकी खिचड़ी खाकर भी मुस्कुराते रहे।

लाल बहादुर शास्त्री के बेटे सुनील शास्त्री ने अपनी किताब ‘लाल बहादुर शास्त्री, मेरे बाबूजी’ में देश के पूर्व प्रधानमंत्री के जीवन से जुड़े कई आत्मीय प्रसंग साझा किए हैं। उन्होंने

शास्त्रीजी ने कहा मुझे लालाजी के वो शब्द आज भी याद है इसीलिए मैं नीव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ। इसीलिए शास्त्रीजी जीवन पर्यन्त नीव के मजबूत पत्थर काम करते रहे और कभी भी नहीं चाह कि उनका नाम अखबारों की सुर्खियाँ बने और लोग

	मेघ
	व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

	वृष
	व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। वलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज मानसिक तनाव दूर होगा।

	मिथुन
	घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अमर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

	कर्क
	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

	सिंह
	व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

	कन्या
	नवीन कार्यों के संबंध में सरकारात्मक आवासन प्राप्त होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

	तुला
	अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रेरणाशक्ति अभी स्यावत बनी रहेगी।

	वृश्चिक
	परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। धार्मिक–सामाजिक समागोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

	धनु
	स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बरने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

	मकर
	व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

	कुंभ
	घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। धार्मिक–मंगलिक कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

	मीन
	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्जों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।